يَخْفٰى ﴿٧﴾ وَ نُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾

छुपे को और हम तुम्हारे लिये आसानी का सामान कर देंगे[7] तो तुम नसीहत फ़रमाओ[8] अगर नसीहत काम दे[9] अन्क़रीब

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾ وَ يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ

नसीहत मानेगा जो डरता है[10] और इस[11] से वोह बड़ा बद बख़्त दूर रहेगा जो सब से बड़ी आग में

الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَ لَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾

जाएगा[12] फिर न उस में मरे[13] और न जिये[14] बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा[15]

وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَ

और अपने रब का नाम ले कर[16] नमाज़ पढ़ी[17] बल्कि तुम जीती दुन्या को तरजीह़ देते हो[18] और

الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾

आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली बेशक येह[19] अगले सहीफ़ों में है[20]

ع ١٩ ١٢ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى ﴿١٩﴾

इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में

اٰياتها ٢٦ ﴿٨٨ سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ ٦٨﴾ رکوعها ١

सूरए ग़ाशियह मक्किय्या है, इस में छब्बीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

बे मेह़नत अ़त़ा हुई और येह आप का मो'जिज़ा है कि इतनी बड़ी किताबे अ़ज़ीम बिग़ैर मेह़नतो मशक़्क़त और बिग़ैर तकरार व दौर के आप को ह़िफ़्ज़ हो गई। (جمل) **6 :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह इस्तिस्ना वाक़ेअ़ न हुवा और अल्लाह तआ़ला ने न चाहा कि आप कुछ भूलें। (جمل) **7 :** कि वह़्य तुम्हें बे मेह़नत याद रहेगी। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि आसानी के सामान से शरीअ़ते इस्लाम मुराद है जो निहायत सहल व आसान है। **8 :** इस क़ुरआने मजीद से **9 :** और कुछ लोग इस से मुन्तफ़ेअ़ हों। **10 :** अल्लाह तआ़ला से **11 :** पन्दो नसीह़त **12** **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वलीद बिन मुग़ीरा और उ़त्बा बिन रबीआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई। **13 :** कि मर कर ही अ़ज़ाब से छूट सके **14 :** ऐसा जीना जिस से कुछ भी आराम पाए। **15 :** ईमान ला कर या येह मा'ना हैं कि उस ने नमाज़ के लिये त़हारत की, इस तक़्दीर पर आयत से नमाज़ के लिये वुज़ू और ग़ुस्ल साबित होता है। (تفسیر احمدی) **16 :** या'नी तक्बीरे इफ़्तिताह़ कह कर **17 :** पन्जगाना। **मस्अला :** इस आयत से तक्बीरे इफ़्तिताह़ साबित हुई और येह भी साबित हुवा कि वोह नमाज़ का जुज़्व नहीं है, क्यूं कि नमाज़ का इस पर अ़त़्फ़ किया गया है और येह भी साबित हुवा कि इफ़्तिताह़ नमाज़ का अल्लाह तआ़ला के हर नाम से जाइज़ है। इस आयत की तफ़्सीर में येह कहा गया है कि تَزَكّٰى से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तक्बीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है। (تفسیر مدارک واحمدی) **18 :** आख़िरत पर। इसी लिये वोह अ़मल नहीं करते जो वहां काम आएं। **19 :** या'नी सुथरों का मुराद को पहुंचना और आख़िरत का बेहतर होना **20 :** जो क़ुरआने करीम से पहले नाज़िल हुए **1 :** "सूरए ग़ाशियह" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, छब्बीस आयतें, बानवे कलिमे, तीन सो इक्यासी ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ؕ﴿۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَىٕذٍ خَاشِعَةٌ ۙ﴿۲﴾ عَامِلَةٌ
बेशक तुम्हारे पास[2] उस मुसीबत की ख़बर आई जो छा जाएगी[3] कितने ही मुंह उस दिन ज़लील होंगे काम करें

نَّاصِبَةٌ ۙ﴿۳﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ﴿۴﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ؕ﴿۵﴾ لَيْسَ
मशक़्क़त झेलें जाएं भड़क्ती आग में[4] निहायत जलते चश्मे का पानी पिलाए जाएं उन के लिये

لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ﴿۶﴾ لَّا يُسْمِنُ وَ لَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ؕ﴿۷﴾
कुछ खाना नहीं मगर आग के कांटे[5] कि न फ़रबही लाएं और न भूक में काम दें[6]

وُجُوْهٌ يَّوْمَىٕذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ﴿۸﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ﴿۹﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ﴿۱۰﴾ لَّا
कितने ही मुंह उस दिन चैन में हैं[7] अपनी कोशिश पर राज़ी[8] बुलन्द बाग़ में कि

تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ؕ﴿۱۱﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۘ﴿۱۲﴾ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۙ﴿۱۳﴾ وَّ وقف لازم
उस में कोई बेहूदा बात न सुनेंगे उस में रवां चश्मा है उस में बुलन्द तख़्त हैं और

اَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۙ﴿۱۴﴾ وَّ نَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۙ﴿۱۵﴾ وَّ زَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ؕ﴿۱۶﴾
चुने हुए कूज़े[9] और बराबर बराबर बिछे हुए क़ालीन और फैली हुई चांदनियां[10]

اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿۱۷﴾ وقفة وَ اِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ
तो क्या ऊंट को नहीं देखते कैसा बनाया गया और आस्मान को कैसा

رُفِعَتْ ﴿۱۸﴾ وقفة وَ اِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿۱۹﴾ وقفة وَ اِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ
ऊंचा किया गया[11] और पहाड़ों को कैसे क़ाइम किये गए और ज़मीन को कैसे

2 : ऐ सय्यिदे आलम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **3 :** ख़ल्क़ पर। मुराद इस से क़ियामत है जिस के शदाइद व अह्वाल हर चीज़ पर छा जाएंगे। **4 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इस से वोह लोग मुराद हैं जो दीने इस्लाम पर न थे बुत परस्त थे या किताबी काफ़िर मिस्ल राहिबों और पुजारियों के, उन्हों ने मेह़नतें भी उठाईं मशक़्क़तें भी झेलीं और नतीजा येह हुवा कि जहन्नम में गए। **5 :** अ़ज़ाब त़रह त़रह का होगा और जो लोग अ़ज़ाब दिये जाएंगे उन के बहुत त़ब्क़े होंगे, बा'ज़ को ज़क़्क़ूम खाने को दिया जाएगा, बा'ज़ को ग़िस्लीन (दोज़ख़ियों की पीप), बा'ज़ को आग के कांटे। **6 :** या'नी उन से ग़िज़ा का नफ़्अ़ ह़ासिल न होगा क्यूं कि ग़िज़ा के दो ही फ़ाएदे हैं : **एक** येह कि भूक की तक्लीफ़ रफ़्अ़ करे। **दूसरे** येह कि बदन को फ़र्बा करे। येह दोनों वस्फ़ जहन्नमियों के खाने में नहीं, बल्कि वोह शदीद अ़ज़ाब है। **7 :** ऐश व ख़ुशी में और ने'मत व करामत में **8 :** या'नी उस अ़मल व त़ाअ़त पर जो दुन्या में बजा लाए थे। **9 :** चश्मे के कनारों पर। जिन के देखने से भी लज़्ज़त ह़ासिल हो और जब पीना चाहें तो वोह भरे मिलें। **10 :** इस सूरत में जन्नत की ने'मतों का ज़िक्र सुन कर कुफ़्फ़ार ने तअ़ज्जुब किया और झुटलाया तो **अल्लाह** तआ़ला उन्हें अपने अ़जाइबे सन्अ़त में नज़र करने की हिदायत फ़रमाता है ताकि वोह समझें कि जिस क़ादिरे ह़कीम ने दुन्या में ऐसी अ़जीबो ग़रीब चीज़ें पैदा की हैं उस की क़ुदरत से जन्नती ने'मतों को पैदा फ़रमाना किस त़रह क़ाबिले तअ़ज्जुब और लाइक़े इन्कार हो सकता है ? चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है **11 :** बिग़ैर सुतून के।

www.dawateislami.net

سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

बिछाई गई तो तुम नसीहत सुनाओ[12] तुम तो येही नसीहत सुनाने वाले हो तुम कुछ उन पर कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं[13]

اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ اِلَيْنَآ

हां जो मुंह फेरे[14] और कुफ़्र करे[15] तो उसे **अल्लाह** बड़ा अ़ज़ाब देगा[16] बेशक हमारी ही त़रफ़

اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

उन का फिरना है[17] फिर बेशक हमारी ही त़रफ़ उन का ह़िसाब है

اٰياتها ٣٠ ﴿٨٩﴾ سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ ﴿١٠﴾ ركوعها ١

सूरए फ़ज्र मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾

उस सुब्ह़ की क़सम[2] और दस रातों की[3] और जुफ़्त और त़ाक़ की[4] और रात की जब चल दे[5]

هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾

क्यूं इस में अ़क़्ल मन्द के लिये क़सम हुई[6] क्या तुम ने न देखा[7] तुम्हारे रब ने आ़द के साथ कैसा किया

12 : **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों और उस के दलाइले क़ुदरत बयान फ़रमा कर। 13 : कि जब्र करो। "هٰذِهِ الْاٰيَةُ نُسِخَتْ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" या'नी येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है 14 : ईमान लाने से 15 : बा'द नसीहत के 16 : आख़िरत में कि उसे जहन्नम में दाख़िल करेगा 17 : बा'द मौत के। 1 : "सूरतुल फ़ज्र" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्तीस या तीस आयतें, एक सो उन्तालीस कलिमे, पांच सो सत्तानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : मुराद इस से या यकुम मुह़र्रम की सुब्ह़ है जिस से साल शुरूअ़ होता है या यकुम ज़िल ह़िज्जा की जिस से दस रातें मिली हुई हैं या ईदुल अज़्ह़ा की सुब्ह़ और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मुराद इस से हर दिन की सुब्ह़ है क्यूं कि वोह रात के गुज़रने और रोशनी के ज़ाहिर होने और तमाम जानदारों के त़लबे रिज़्क़ के लिये मुन्तशिर होने का वक़्त है और येह मुर्दों के क़ब्रों से उठने के वक़्त के साथ मुशाबहत व मुनासबत रखता है। 3 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मुराद इन से ज़िल ह़िज्जा की पहली दस रातें हैं क्यूं कि येह ज़माना आ'माले ह़ज में मश्ग़ूल होने का ज़माना है और ह़दीस शरीफ़ में इस अ़शरे की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं और येह भी मरवी है कि रमज़ान के अ़शरए अख़ीरा की रातें मुराद हैं या मुह़र्रम के पहले अ़शरे की। 4 : हर चीज़ के या उन रातों के या नमाज़ों के और येह भी कहा गया है कि जुफ़्त से मुराद ख़ल्क़ और त़ाक़ से मुराद **अल्लाह** तआ़ला है। 5 : या'नी गुज़रे, येह पांचवीं क़सम है आ़म रात की, इस से पहले दस ख़ास रातों की क़सम ज़िक्र फ़रमाई गई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि इस से ख़ास शबे मुज़्दलिफ़ा मुराद है जिस में बन्दगाने ख़ुदा त़ाअ़ते इलाही के लिये जम्अ़ होते हैं। एक क़ौल येह है कि इस से शबे क़द्र मुराद है जिस में रह़मत का नुज़ूल होता है और जो कस्रते सवाब के लिये मख़्सूस है। 6 : या'नी येह उमूर अरबाबे अ़क़्ल के नज़्दीक ऐसी अ़ज़मत रखते हैं कि ख़बरों को इन के साथ मुअक्कद करना शायां है क्यूं कि येह ऐसे अ़जाइब व दलाइल पर मुश्तमिल हैं जो **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद और उस की रबूबिय्यत पर दलालत करते हैं और जवाबे क़सम येह है कि काफ़िर ज़रूर अ़ज़ाब किये जाएंगे, इस जवाब पर अगली आयतें दलालत करती हैं। 7 : ऐ सय्यिदे आ़लम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ।

www.dawateislami.net